मेरा पसन्दीदा चित्र

तापोशी घोषाल

एक बिजूके का गीत

चित्र बनाना और चित्र देखना, दोनों ही मुझे बहुत अच्छा लगता है। यहाँ जिन चित्रों का ज़िक्र किया है उन्हें मैंने एक किताब *द सॉन्ग ऑफ ए स्क्रेक्रो* (एक बिजूके का गीत) में देखा। देखते ही मेरे मन में एक पल के लिए, एक लहर-सी दौड़ गई। एक खुशनुमा आज़ादी की लहर।

पता है क्यों? क्योंकि बचपन से ही मेरे मन के किसी कोने में एक इच्छा छुपी हुई थी। कभी-कभी यह उभरकर बाहर आना चाहती है। पर, आ नहीं पाती। इस चित्र में मुझे अपनी वही इच्छा नज़र आई –

मैं एक खुले, हरे-भरे मैदान में, अपनी बाँहें फैलाए दौड़ रही हूँ। मन में छुपी इस "आज़ादी की इच्छा" को कागज़ पर देखते ही यह चित्र मेरे मन के और करीब आ गया।

इस किताब की एक खास बात यह है कि इस के चित्रकार और लेखक एक ही हैं। इनका नाम है शुद्धसत्व बसु। शुद्धसत्व एक जाने-माने पेंटर हैं। वे एनिमेशन फिल्में भी बनाते हैं। *द सॉन्ग ऑफ ए स्क्रेक्रो* शुद्धसत्व की पहली किताब है। सन् 2002 में इसके चित्रों के कारण इस किताब को चित्र कथा अवॉर्ड मिला। और सन् 2003 में इसे Biennial of Illustrations Bratislava से सम्मान प्राप्त हुआ है। यह बच्चों की किताबों के चित्रकारों को मिलने वाले सबसे पुराने पुरस्कारों में से एक है।

यह एक बहुत ही संवेदनशील कहानी है। खैर, अब हम कहानी की बात छोड़कर चित्रों पर ध्यान देते हैं।

क्या तुमने कभी चित्रों को पढ़ा है? हाँ, ठीक शब्दों की तरह!! पता है! एक ही चित्र को कई दृष्टिकोणों से पढ़ा जा सकता है? कभी-कभी तो चित्र में कई गहरे अर्थ छुपे होते हैं। और उन्हें पढ़ पाना एक पहेली बूझने जैसा होता है।

इस चित्र में एक बिजुका (काग भगौड़ा) नीले आकाश तले, मैदान में दौड़ रहा है। उसके

चेहरे पर खिलखिलाहट है। साथ ही हरी धरती पर छोटे-छोटे सफेद फूल खिल गए हैं। लगता है जैसे वे आकाश में उड़ते सफेद बादलों का स्वागत कर रहे हैं। पीली तितलियाँ भी खुशी के माहौल में, अपने रंगीन पंखों को फैलाए खुशी का इज़हार कर रही हैं या कोई गीत गुनगुना रही हैं!!

इस चित्र में स्वाधीनता का एहसास छुपा है। इसे चित्रकार ने एक आज़ाद बिजुका, उड़ते बादल, उड़ती तितलियों और यहाँ-वहाँ खिले फूलों से दर्शाया है। खुला आकाश, खुली धरती, इस आज़ादी को और आज़ाद बनाते हैं। इससे भी ज़्यादा, एक पहाड़ है जो स्थिर, अचल, अटल होते हुए भी इन सभी को प्रोत्साहित कर रहा है।

अच्छा! क्या यह एक जादू-सा नहीं लगता? एक चित्रकार, इतनी छोटी-सी जगह में, इतने विशाल जगत की सृष्टि कर ले-

सकता है। इतने सारे बादल, एक विशाल पहाड़ सबको एक छोटे-से कागज़ पर उतारना। कितना जादुई लगता है ना! ध्यान से देखो – जो बादल पास हैं, वे आकार में बड़े हैं। जो ऊपर हैं, जो नीचे हैं वे पीछे की तरफ हैं और छोटे हैं। बादलों के आकार को छोटा कर देने से धरती, बिजुका और देखनेवाले से उनकी एक दूरी बनाई गई है।

वास्तव में, बिजुका की ऊँचाई और आकार, पहाड़ की ऊँचाई और आकार से काफी छोटा है परन्तु चित्र में इसका उल्टा बनाया गया है क्योंकि चित्रकार ने पहाड़ को छोटा बनाकर उसकी दूरी और विशालता को दर्शाया है। इसे पर्स्पेक्टिव (Perspective) कहते हैं। यह एक साधारण दृष्टि भ्रम है, जिसके सहारे चित्रकार अपनी तूलिका में रंग भरकर कागज़ या कैनवास पर जादू दिखाता है।